

॥ गङ्गाष्टेत्तरशतनामावलिः ॥

श्री-गङ्गायै नमः

विष्णु-पादाङ्ग-सम्भूतायै नमः

हर-वल्लभायै नमः

हिमाचलेन्द्र-तनयायै नमः

गिरि-मण्डल-गामिन्यै नमः

तारकाराति-जनन्यै नमः

सगरात्मज-तारिकायै नमः

सरस्वती-समायुक्तायै नमः

सु-घोषायै नमः

सिन्धु-गामिन्यै नमः

१०

भागीरथ्यै नमः

भाग्य-वत्यै नमः

भगीरथ-रथानुगायै नमः

त्रिविक्रम-पदोद्धूतायै नमः

त्रि-लोक-पथ-गामिन्यै नमः

क्षीर-शुभ्रायै नमः

बहु-क्षीरायै नमः

क्षीर-वृक्ष-समाकुलायै नमः

त्रि-लोचन-जटा-वासिन्यै नमः

ऋण-त्रय-विमोचिन्यै नमः

२०

त्रिपुरारि-शिरश्वूडायै नमः

जाह्व्यै नमः

नर-भीति-हृते नमः

अव्ययायै नमः

नयनानन्द-दायिन्यै नमः

नग-पुत्रिकायै नमः

निरञ्जनायै नमः

नित्य-शुद्धायै नमः

नीरजालि-परिष्कृतायै नमः

सावित्र्यै नमः

३०

सलिलावासायै नमः

सागराम्बु-समेधिन्यै नमः

रम्यायै नमः

विन्दु-सरोवर्कायै नमः

वृन्दारक-समाश्रितायै नमः

उमा-सपल्यै नमः

शुभ्राङ्गायै नमः

श्री-मत्यै नमः

धवलाम्बरायै नमः

आखण्डल-वनावासायै नमः ४०

खण्डेन्दु-कृत-शेखरायै नमः

अमृताकार-सलिलायै नमः

लीला-लङ्घित-पर्वतायै नमः

विरिञ्चि-कलशावासायै नमः

त्रि-वेण्यै नमः

त्रि-गुणात्मिकायै नमः

सङ्कृताधौघ-शमन्यै नमः

शङ्ख-दुन्दुभि-निःस्वनायै नमः

भीति-द्व्यै नमः:		शिव-दायै नमः:
भाग्य-जनन्यै नमः:	५०	संसार-विष-नाशिन्यै नमः:
भिन्न-ब्रह्माण्ड-दर्पिण्यै नमः:		प्रयाग-निलयायै नमः:
नन्दिन्यै नमः:		शीतायै नमः:
शीघ्र-गायै नमः:		ताप-त्रय-विमोचिन्यै नमः:
सिद्धायै नमः:		शरणागत-दीनार्त-
शरण्यायै नमः:		परित्राणायै नमः:
शशि-शेखरायै नमः:	८०	सु-मुक्ति-दायै नमः:
शं-कर्यै नमः:		पाप-हन्त्र्यै नमः:
शफरी-पूर्णायै नमः:		पावनाङ्गायै नमः:
भर्ग-मूर्ध-कृतालयायै नमः:		पर-ब्रह्म-स्वरूपिण्यै नमः:
भव-प्रियायै नमः:	६०	पूर्णायै नमः:
सत्य-सन्ध-प्रियायै नमः:		पुरातनायै नमः:
हंस-स्वरूपिण्यै नमः:		पुण्यायै नमः:
भगीरथ-सुतायै नमः:		पुण्य-दायै नमः:
अनन्तायै नमः:		पुण्य-वाहिन्यै नमः:
शरच्चन्द्र-निभाननायै नमः:		पुलोमजार्चितायै नमः:
ओङ्कार-रूपिण्यै नमः:	९०	पूतायै नमः:
अतुलायै नमः:		पूत-त्रि-भुवनायै नमः:
क्रीडा-कल्लोल-कारिण्यै नमः:		जयायै नमः:
स्वर्ग-सोपान-सरण्यै नमः:		जङ्घमायै नमः:
सर्व-देव-स्वरूपिण्यै नमः:	७०	जङ्घमाधारायै नमः:
अम्भः-प्रदायै नमः:		सिद्ध-योगि-निषेवितायै नमः:
दुःख-हन्त्र्यै नमः:		जल-रूपायै नमः:
शान्ति-सन्तान-कारिण्यै नमः:		जगद्-धात्र्यै नमः:
दारिद्र्य-हन्त्र्यै नमः:		जगद्-भूतायै नमः:

जनार्चितायै नमः	१००	भव-पत्न्यै नमः
जहु-पुत्र्यै नमः		भीष्म-मात्रे नमः
जगन्मात्रे नमः		सिद्ध-रम्य-स्वरूप-धृते नमः
जम्बू-द्वीप-विहारिण्यै नमः		उमा-सहोदर्यै नमः
		अज्ञान-तिमिरापहृते नमः १०८

॥ इति श्री-गङ्गाष्टोत्तरशत-नामावलिः सम्पूर्णा ॥

This stotra can be accessed in multiple scripts at:

http://stotrasamhita.net/wiki/Ganga_Ashottara_Shatanamavali_2.

 generated on November 2, 2025

Downloaded from  <http://stotrasamhita.github.io> |  StotraSamhita | Credits